B.ed 1st year Paper-C2, Unit-3

भारतीय चिंतकों के शिक्षासंबन्धी विचारों का विश्लेषणात्मक समझ :-

स्वामी विवेकानंद

जीवन परिचय :- स्वामी विवेकानंद भारत की विभूति विश्व विख्यात स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को मकर संक्राती के दिन कोलकता में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री विश्वनाथ दत्त था ये कोलकता के प्रसिद्ध वकील थे। सन्यास सन्यास ग्रहण करने से पहले विवेकानंद का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। वे जाति के बंगाली क्षत्रिय थे, अपने छात्र जीवन में स्वामी विवेकानंद बड़े प्रभावित और अनेक प्रकार के खेलो में उत्साहपूर्वक भाग लेते थे। 17 वर्ष की अवस्था में जब वे B.A के छात्र थे तब वे स्वामी रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आए, पहले तो वे स्वामी रामकृष्ण की विचारधारा का विरोध करते थे किंतु वे शीघ्र ही इतने प्रभावित हुए की उनके परमभक्त बन गए राम कृष्ण ने अपना सम्पूर्ण ज्ञान और तेज उनके हृदय में डाल दिया। अतः नरेन्द्र से वे स्वामी विवेकानन्द हो गए और स्वामी विवेकानंद ने ~~श्रीमा~~ श्री रामकृष्ण परमहंस के संदेशों और विचारों को देश-विदेश में फैलाने में वही कार्य किया जो सेंट-पॉल ने ईसामसीह के संदेश को फैलाने में किया था उन्होने रामकृष्ण द्वारा अनुभव किए गए वेदान्त के सिद्धान्तो पर अमेरिका और भारत में प्रचार किया। अपने अल्पकालीन जीवन में मानव कल्याण के लिए स्वामी जी ने जो अध्यात्मवाद तथा भारतीय दर्शन के भौतिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया वह संसार के इतिहास में सदा स्वर्णनीय रहेगा।

स्वामी विवेकानंद की मृत्यु अल्प आयु में ही 1902 ई॰ में हो गई।

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धांत :

स्वामी विवेकानंद की गणना संसार के महान शिक्षा शास्त्रीयों में की जाती है उनकी शिक्षा दर्शन संबंधी आधारभूत सिद्धांतो पर निम्न पंक्तियों में प्रकाश डाला जा रहा है जो निम्नलिखित है :-

- शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे व्यक्ति का शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक विकास हो सके।
- शिक्षा के क्षेत्र मे बालिकाओं को बालकों के समान शिक्षा दी जानी चाहिए।
- शिक्षा ऐसी हो जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन का बल बढ़े, तथा बुद्धि का विकास हो एवं व्यक्ति आत्मनिर्भर बने।
- स्त्री शिक्षा का केन्द्र धर्म होना चाहिए क्योंकि स्त्रियाँ ही धर्मधारिणी होती है।
- केवल पुस्तकों का अध्ययन ही शिक्षा नहीं है।

* शिक्षा का अर्थ *

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल उन सूचनाओ से ही नहीं है जो बालकों के मस्तिष्क में बल-पूर्वक ठुसी जाए या भरी जाए बल्कि उन्होने लिखा है कि " यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्वकोष ऋषि बन जाते।"

स्वामी विवेकानंद के अनुसार " शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है।"

शिक्षा का उद्देश्य

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों में देश प्रेम की भावना का समावेश बताया है स्वामी जी का कथन है कि

"यदि शिक्षा देशभक्ति की प्रेरणा नहीं देती है तो उसे राष्ट्रीय शिक्षा नहीं कहा जा सकता है।"

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित है :-

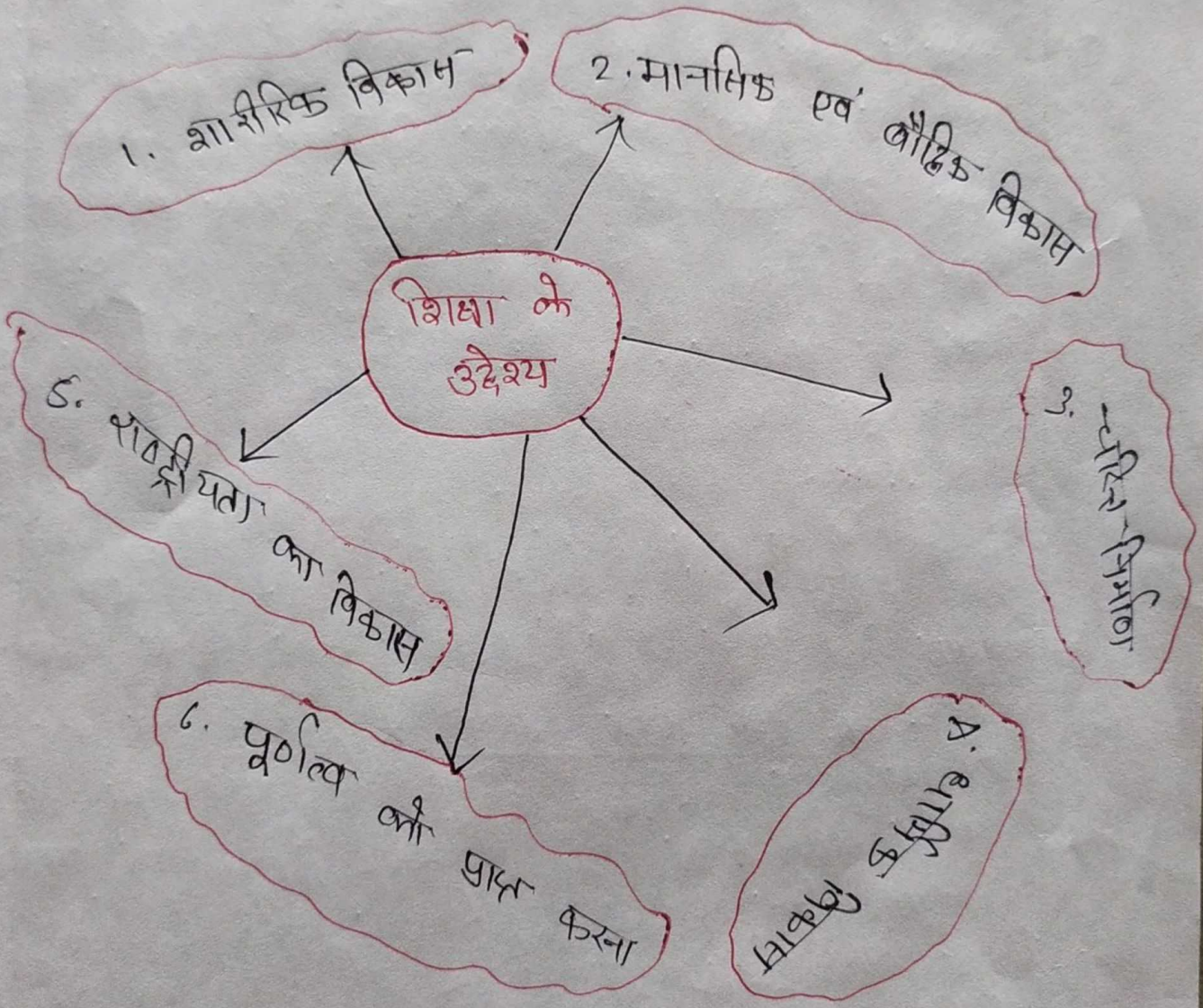

पाठ्यक्रम

स्वामी जी के अनुसार जीवन का चरम अंश आध्यात्मिक विकास है पर इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने लौकिक समृद्धि को कोई स्थान नहीं दिया

है। उन्होंने उन सभी विषयों को सम्मिलित किया जिनके अध्ययन से आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ भौतिक उन्नति भी होती रहे।

स्वामी जी ने आध्यात्मिक पूर्णता के लिए धर्म दर्शन, पुराण, उपनिषद, साधु संगत, उपदेश तथा कतन और समृद्धि के लिए भाषा पूर्ण, राजनीति, भूगोल, अर्थशास्त्र, विज्ञान, मनोविज्ञान, कला, व्यवसायिक विषय, कृषि, खेलकूद व्यायाम आदि विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया।

शिक्षण विधि

स्वामी विवेकानंद ने भारत के उसी प्राचिन अध्यात्मिक शिक्षण पद्धति को अपनाने पर बल दिया जिसमें गुरु और शिष्य के प्रति संबंध अत्यंत घनिष्ठ रहते थे। अध्यात्मिक अथवा धर्म पद्धतियों की विधि निम्नलिखित है:—

i) चित्तवृतियों के निरोध के लिए योग ~~विधि~~ विधि का प्रयोग।

ii) मन को केन्द्रिकरण विधि द्वारा विकसित करना।

iii) ज्ञान को व्याख्यान तक विचार विमर्श स्वानुभव तथा रचनात्मक कार्यों एवं उपदेशों द्वारा प्रदर्शित तथा गठित करना।

iv) बालक को व्यक्तिगत निर्देशन तथा परामर्श विधि के द्वारा उचित मार्ग की ओर अग्रसर करना।

v) शिक्षक के गुणों तथा चरित्र का बुद्धि द्वारा अनुकरण करना।

बालक का स्थान

जिन महत्वपूर्ण गुणों को स्वामी जी के अनुसार बालक के व्यक्तित्व में समाहित करना चाहिए वे इस प्रकार है :-

i) विद्यार्थी को शरीर एवं मन से बलवान होना चाहिए।

ii) विद्यार्थी में सत्य को जानने की प्रबल इच्छा होनी चाहिए।

iii) विद्यार्थियों को विद्याप्रेमी, विवेकशील, कर्तव्यशील, विचारशील आदि होनी चाहिए।

iv) धर्म व धार्मिक क्रियाओं में आस्थावान होना चाहिए।

शिक्षक का स्थान

स्वामी जी का कथन है " वास्तव में किसी को किसी के द्वारा कभी शिक्षा नहीं दी गई है हमसे से प्रत्येक को अपने आप को शिक्षा देनी पड़ती है।"

बाह्य शिक्षक केवल ऐसे सुझाव देते है जिनसे आत्मा कार्य करने और समझने के लिए चैतन्य हो जाती है।

स्वामीजी ने शिक्षक के अंदर बहुत से गुणों की अपेक्षा की जो इस प्रकार है :-

i) शिक्षक को अध्यात्मिक दृष्टि से दिव्य एवं परिपक्व होना चाहिए।

ii) शिक्षक को धार्मिक ग्रन्थों के सार तत्वों से अवगत होना चाहिए।

iii) शिक्षक को पवित्र व ब्रह्मचर्य पूर्ण होना चाहिए।

iv) शिक्षक को सफल मनोवैज्ञानिक होना चाहिए जिससे वह छात्रों को पूर्णरूप से जान सके।

v) शिक्षक में त्याग, साहस, उत्साह, विश्वबंधुत्व आदि गुण होने चाहिए।

जन शिक्षा

स्वामीजी के समय अपने देश की स्थिति बहुत दैनिय थी उसके विपरित पश्चिमी देशों की दशा बहुत ही अच्छी थी वहाँ के लोग संपन्न और वैभवशाली जीवन जी रहे थे। स्वामी जी ने इन सभी को अपने आँखों से देखा था, उन्होंने अनुभव किया कि हमारी राजनीतिक, पराधिनता आर्थिक विपन्नता, समाजिक पिछड़ेपन और धार्मिक अंधविश्वासों का मूल कारण अशिक्षा है।

उन्होंने उद्घोष किया कि जब तक भारत के सभी नर-नारी शिक्षित नहीं होंगे तब तक हम जीवन के किसी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकते। उन्होंने शिक्षित लोगों को जागृत करने की कोशिश की और कहा कि वे अशिक्षित प्रौढ़ों और बच्चों को साक्षर बनाए एवं उन्हें शिक्षित करें।

7

स्त्री शिक्षा

स्वामी जी स्त्रियों की दिनहीन दशा से दुख थे वे चाहते थे कि उन्हें समाज में स्त्रियों को समाज में श्रेष्ठ एवं परम आदरणीय स्थान प्राप्त हो। वे स्त्रियों के शिक्षा के पक्ष में थे तथा देश के विकास के लिए उनके उत्थान पर बल देते थे इन्ही के शब्दों में

" पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करें तब वे आपको बताएगी की उनके लिए कौन से सुधार आवश्यक है उनके मामले में बोलने वाले तुम कौन हो।"

निष्कर्ष = उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को बहुत ज्यादा महत्व दिया है स्वामी जी के अनुसार शिक्षा ही एक ऐसी चीज है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बना सकता है वे एक महान दार्शनिक भी थे उन्होने अध्यात्म एवं धर्म को भी माना है। स्वामी जी ने जन शिक्षा एवं स्त्री शिक्षा पर ज्यादा जोर दिया है क्योंकि उनका मानना है कि जब तक देश का हर एक व्यक्ति शिक्षित नही होगा तब तक हमारा देश विकसित नही कर पायेगा।